Topic :– तुर्कों का आगमन April 15, 2020.

तुर्क आक्रमण :

8वीं शती के प्रारम्भ से मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में सिन्ध पर जो अरब आक्रमण हुआ था, उसका कोई स्थाई परिणाम नहीं हुआ। अरबों का राज्य सिन्ध और मुल्तान के पूर्व में नहीं फैल सका तथा उनकी शक्ति शीघ्र ही क्षीण हो गयी। उनके इस अधूरे कार्य को तुर्कों ने पूरा कर दिया। तुर्क चीन की उत्तरी-पश्चिमी सीमाओं पर निवास करने वाली एक असभ्य एवं बर्बर जाति थी। उन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया तथा इसका प्रचार पूरे जोर-शोर के साथ करने में जुट गये। उनका उद्देश्य एक विशाल मुस्लिम साम्राज्य स्थापित करना था।

भारत में सबसे पहले जो तुर्क आक्रामणकारी आये, वे गजनी के शासक कुल से संबंधित थे। 962 ई० में अलप्तगीन नामक एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति ने गजनी में एक स्वतंत्र तुर्की राज्य की स्थापना की। उसके दामाद सुबुक्तगीन ने उसके वंश का अन्त कर 977 ई० में राजगद्दी हथिया ली। वह एक शक्तिशाली शासक था जो भारत पर आक्रमण की योजनाएँ तैयार करने लगा। पंजाब के हिन्दू शासक जयपाल ने उसकी योजनाओं को प्रारम्भ में ही विफल कर देने के उद्देश्य से 986-87 ई० में एक बड़ी सेना के साथ गजनवी पर आक्रमण कर दिया। परन्तु दुर्भाग्यवश जयपाल को अत्यन्त अपमानजनक संधि करनी पड़ी। हर्जाने के रूप में जयपाल सुबुक्तगीन को 50 हाथी तथा कुछ प्रदेश देने का वचन दिया, परन्तु लाहौर पहुँचकर उसने संधि की अपमानपूर्ण शर्तों को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया।

सुबुक्तगीन ने उसके राज्य पर आक्रमण कर लूटपाट की। जयपाल ने 991 ई० में कुछ मित्र राजाओं की सहायता से गजनी पर पुनः आक्रमण कर दिया, किन्तु युद्ध में सुबुक्तगीन की ही विजय हुई। इस विजय के फलस्वरूप सुबुक्तगीन ने पेशावर तक के भूभाग पर अधिकार कर लिया। 997 ई० में सुबुक्तगीन की मृत्यु हो गयी।

महमूद गजनवी :

9वीं शताब्दी के अंत में अब्बासी खलीफाओं का पतन आरम्भ हो गया था। 10वीं शताब्दी में प्रमुख चार वंश थे— जिन्होंने खलीफा की सत्ता को स्वीकार किया, परन्तु वास्तव में वे स्वतंत्र राज्य थे— ताहिरिद, सफाविद, समानिद तथा बुईद। इसके बाद तुर्क फारसी साम्राज्य एवं तुर्क अब्बासी साम्राज्य शुरू हुआ। तुर्क अब्बास साम्राज्य में अंगरक्षकों और पेशेवर सैनिकों के रूप में आए थे। 9वीं शताब्दी के अंत में ट्रॉस-आक्सियाना, खुरासान तथा ईरान के कुछ भागों पर सासानी शासकों का राज्य था।

Continue..............

April 15, 2020.

⊙ यूनानी लेखकों द्वारा उल्लिखित गणतंत्र राज्य :–

1. अद्रेष्टी – इसकी राजधानी पिम्प्रम थी। यह गणराज्य रावी नदी के पास स्थित था।
2. कथान – इसकी राजधानी सकाल थी। यह गणराज्य लाहौर एवं अमृतसर के आस-पास स्थित था।
3. सौफिलट (सौभूति).
4. सिबोई (सिबी).
5. क्षुद्रक एवं मालव.
6. अग्रसेनी.
7. जथोई.
8. सामबस्ती (अम्बास्था)।

⊙ अशोक के शिलालेख में उल्लिखित गणराज्य :–

1. कंबोज,
2. गंधार,
3. राष्ट्रिक,
4. लौना,
5. कन्नौज,
6. पितिनिक,
7. नाभक,
8. भोज,
9. अपरांत,
10. पर्दी,
11. आन्ध्र।

⊙ महत्वपूर्ण पारिभाषिक शब्दावली :–

संथागार : गणतन्त्रात्मक शासन प्रणाली में प्रतिनिधियों की संस्था को संथागार कहते थे।

शलाकाग्राहपक : विभिन्न रंग की शलाकाओं को एकत्र करने वाला शलाकाग्राहपक (Polling officer) कहलाता था।

महामात्र : राज्य के प्रमुख अधिकारियों का वर्ग महामात्र कहलाता था।

बलि : राजा को उपहार, नजराना, भेंट आदि जो मिलता था, वह बलि कहलाता था।

द्रोणमापक : उपज में राजा के हिस्से की माप करने वाले द्रोणमापक कहलाते थे।

शतघ्नी : एक प्रकार का अस्त्र।

पंचालिका : छोटी राजकुमारियों का खिलौना।

वीटा : राजकुमारों का खिलौना।

Continue ....

Dr. Madan Paswan (1)

History, Class: B.A. Part-I (Sub.) Paper. April 15, 2020.

Topic: Mahajanapadas.

प्राचीन भारत के सोलह महाजनपद (600-325 ई०पू०)

○ बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तरनिकाय के अनुसार छठी शताब्दी ई०पू० में निम्न 16 महाजनपद (क्षेत्रीय राज्य) विद्यमान थे :-

	महाजनपद	राजधानी
1.	काशी	वाराणसी
2.	कुरु	इंद्रप्रस्थ (मेरठ तथा दक्षिण पूर्व हरियाणा क्षेत्र).
3.	अंग	चम्पा (भागलपुर, मुंगेर).
4.	मगध	राजगृह या गिरिव्रज (पटना, गया, शाहाबाद क्षेत्र).
5.	वज्जि	विदेह और मिथिला.
6.	मल्ल	कुशावती (कुशीनारा) - देवरिया, गोरखपुर के क्षेत्र).
7.	चेदि	शुक्तिमती (सोत्थिवती - बुंदेलखण्ड का क्षेत्र).
8.	वत्स	कौशांबी (इलाहाबाद का क्षेत्र).
9.	कोशल	अयोध्या, बुद्धकाल में दो भाग, उत्तरी भाग की राज० श्रावस्ती.
10.	पंचाल	उत्तरी पंचाल - अहिच्छत्र पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र).
11.	मत्स्य	विराटनगर (जयपुर के आस-पास के क्षेत्र)
12.	शूरसेन	मथुरा (मेथोरा - सूरसेनाई / यूनानी).
13.	अस्सक	पोतना या पाटेली (अश्मक), (गोदावरी क्षेत्र).
14.	अवंति	उत्तरी अवंति - उज्जयिनी, दक्षिणी अवंति - महिष्मती (मालवा क्षेत्र).
15.	गंधार	तक्षशिला (पेशावर के क्षेत्र).
16.	कंबोज	राजपुर या हाटक (उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत).

○ जैन ग्रंथ भगवतीसूत्र में दिये 16 महाजनपदों की सूची :-

1. अंग	9. पाढ़य
2. बंग	10. लाढ़
3. मगह (मगध)	11. वज्जि
4. मलय	12. मोलि (मल्ल)
5. मालव	13. कोशल
6. अच्छ	14. काशी
7. वच्छ (वत्स)	15. संभुत्तर
8. कोच्छ	16. अवध

○ समकालीन गणतंत्र :-

1. कपिलवस्तु के शाक्य.	4. कुशीनारा के मल्ल.
2. रामग्राम के कोलिय.	5. मिथिला के विदेह.
3. पावा के मल्ल.	6. पिप्पलिवन के मोरिय.

Continue.........

जिनको अपने उत्तरी तथा पूर्वी सीमाओं पर तुर्कों से हमेशा संघर्ष करना पड़ता था। इसी संघर्ष के कारण एक नए प्रकार के सैनिक गाज़ी का उदय हुआ।

सासानी साम्राज्य के प्रशासकों में एक तुर्क गुलाम अल्प्तगीन खुरासान का सेनापति हुआ। सासानी साम्राज्य के पतन के बाद उसने मध्य एशिया में अपना राज्य स्थापित किया। गजनी उसकी राजधानी थी। इस काल को "प्रबुद्ध तानाशाही" का काल कहा जाता है।

गजनी वंश का संस्थापक अलप्तगीन ही था। उसने 1700 तुर्क गुलामों को चुना, जिसमें सुबुक्तगीन भी था। जब सुबुक्तगीन ने हिम्मत और हौसला दिखाया तो उसे अलप्तगीन का सद्भाव प्राप्त हुआ।

सियासतनामा के अनुसार सुबुक्तगीन ने अल्प्तगीन ने सभी तौर-तरीकों, खान-पान, शिकार, चौगान, तीरंदाजी इत्यादि को अपनाया। अपने संरक्षक की मृत्यु के बाद सुबुक्तगीन ने अपना स्वतंत्र राज्य गजनी में स्थापित किया। गजनी के शासक अबू-बक्र लाविक को निकालकर उसने अपने को नया शासक घोषित कर दिया। शक्ति ग्रहण करने के बाद उसने उत्तर भारत की ओर कदम उठाया। सन् 986 ई० में सुबुक्तगीन ने जयपाल के विरुद्ध सेना भेजी जिसके फलस्वरूप जयपाल संधि करने के लिए बाध्य हो गया। उसके समय सारा अफगानिस्तान, बल्ख, खुरासान तथा भारत की पश्चिमोत्तर सीमा उसके राज्य में सम्मिलित थे।

अपने पिता की मृत्यु के बाद महमूद ने गजनी पर अधिकार कर लिया। तारीख-ए-गुजीदा के अनुसार सीस्तान के राजा खलफ बिन अहमद को हराने के बाद महमूद ने 'सुल्तान' की पदवी धारण की। महमूद 'सुल्तान' की उपाधि धारण करने वाला प्रथम शासक था। परन्तु, खलीफा ने इस उपाधि को स्वीकार नहीं किया था क्योंकि खलीफा ने पहले यह उपाधि सल्जुक शासक तुगरिल को उस समय दी थी जब उसने 1040 ई० में महमूद के बेटे मसूद पर "दंडक" नामक स्थान पर विजय प्राप्त की थी। खुतबा में तुगरिल का उल्लेख 'सुल्तान-अल-मुअज्जम' किया गया है। गजनी काल में, बारथोल्ड के अनुसार महमूद ने खलीफा कादिर के पास प्रार्थनापत्र भेजा कि नए स्थापित किए हुए राज्यों को विधि द्वारा प्रतिष्ठा मिले तथा उनके अधिकार न्यायोचित माने जाएँ।

—Dr. Madan Paswan, History.

Continue.......